Reg. No.: V27452 ISSN 0974 7222

PARISHEELAN

An International Research Journal

Vol.-XI No. -3 & 4 2015

Suruchi Kala Samiti, Varanasi

Scanned with CamScanner

मयूखदूत में अलंकार-सौन्दर्य

प्रो० अर्चना दुबे*

काव्य में विद्यमान उस अङ्गी रस को शब्द या अर्थरूप अङ्गों के द्वारा कभी-कभी उपकृत (उत्कर्षयुक्त) करते हैं, वे अनुप्रास और उपमा आदि (शब्दालंकार तथा अर्थालंकार शरीर के शोभाधान द्वारा परम्परया शरीरी आत्मा के उत्कर्षजनक हार आदि (दैहिक अलंकारों) के समान (काव्य के) अलङ्कार होते हैं।

उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।

हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ।।[1]

काव्य में रस विद्यमान है और शब्द अर्थ के द्वारा कभी- भी उत्कर्ष युक्त होते है इसी तरह से शरीर का भी हार आदि के समान अलंकार शोभा बढ़ाते है । अर्थात् शब्द और अर्थ अंगों के उत्कर्ष द्वारा विद्यमान मुख्य रस को उपकृत करते है ।

जहाँ रस नहीं होता वहाँ कुरुप स्त्री के द्वारा धारण किये अलंकारों के समान उक्तिवैचित्र्य प्रतीत होता है । कहीं रस के होने पर भी सुन्दर नायिका को भी यदि ग्रामीण अलंकार पहना दिये जाए तो सौन्दर्य वर्धक न होकर अपकर्षक हो जायेगा ।

अलंकार का स्वरूप - अलंकार के दो प्रकार है – शब्दगत और अर्थगत अर्थात् शब्दालंकार और अर्थालङ्कार ।

साहित्यशास्त्रियों ने अलंकारों को प्रयुक्तः दो वर्गों में विभक्त किया है, शब्दालंकार और अर्थालंकार अलंकार काव्य के शरीर-शब्द और अर्थ- में रहने वाले धर्म है, अतः जो अलंकार शब्दों के सौन्दर्य को बढ़ाकर काव्य की शोभा बढ़ाते है, वे शब्दालंकार और जो अर्थों के सौन्दर्य को बढ़ाकर काव्य की शोभा बढ़ाते है, वे अर्थालंकार है । शब्दालंकार किन्हीं विशिष्ट शब्दों पर आश्रित रहते है और फलस्वरूप उन शब्दों के हटाये जाने पर वे भी हट जाते है, इसके विपरित अर्थालंकार अर्थों पर आश्रित रहते है और इसलिए उन अर्थों के वाचक शब्दों को हटाकर उनके स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करने पर भी वे यथावत् बने रहते है ।

मयूखदूत में अलंकार सौन्दर्य – शब्दालंकार मयूखदूत में अनुप्रास अलंकार की छटा सर्वत्र दृष्टिगोचर है । यथा –

दृष्ट्वा कांचित् स्मरसमदयुतां कामिनीं काञ्चनाभां

पद्माभां तां सुभगनयनां दृष्टिविक्षेपदक्षाम् ।।[2]

*श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय वेवारल, जिला गीर, सोमनाथ, गुजरात चलदूरवाणी

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत पद्य में ककार की आवृत्ति बार-बार होने से अनुप्रास[3] मोहित करता है । साथ ही भां भां की आवृत्ति मन्त्रमुग्ध करता है ।

शब्दालंकार में कवि की लेखनी की विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता है । अपितु यह अलंकार अनायास ही नैसर्गिक रूप में उनकी वाणी के सौन्दर्य को वृद्धिप्रदान करते हैं । मयूखदूत में यत्र-तत्र अनुप्रास, यमक, श्लेष एवं पुनरुक्तवभास अलंकार का सुन्दर निरूपण दृष्टिगोचर होता है ।

अनुप्रास अलंकार - अनुप्रास अलंकार के सहज, सरल निरूपण के स्थल तो अनेकशः पाए जाते है किन्तु रसपोषक, चमत्कृतिजनक व उद्धरणीय स्थल कुछ ही है । एतदर्थ छेक त्वया वृत्यानुप्रासों के यहाँ कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है –

सर्वप्रथम मयूखदूत के प्रथम छन्द में ही वृत्यनुप्रास[4] का सुन्दर निरूपण दिखाई देता है–

तत्रत्यैका सुभगरमणी शुभ्ररूपासुरम्या

प्राप्याशां सा हृदयनिहिते तस्ये रागे सुबद्धा ।।[5]

यहाँ सुभग तथा सुरम्या पदों में 9स" व्यंजन की आवृत्ति हुई है । अतः यहाँ वृत्यानुप्रास की विच्छति है । अन्यत्र –

दृष्ट्वा कांचित् स्मरमदयुतां कामिनीं काञ्चनाभां

पद्नाभां तां सुभगनयनां दृष्टिविक्षेपदक्षाम् ।।[6]

इस पद्यांश के द्वितीय चरण में 9कामिनी" एवं काञ्चननाभा शब्दों में 9का" व्यंजक की आवृत्ति से वृत्यानुप्रास का सौन्द्रर्य प्रस्फुटित हुआ है ।

मयूखदूत काव्य में पद-पद पर उपमा आदि अनेकानेक अर्थालंकारों का मंजुल-सन्निवेश है। महाकवि का यह अलंकार-प्रयोग इतना सहज, नैसर्गिक एवं चातुर्यपूर्ण है कि कहीं भी ये अलंकार भाषा की गति को आक्रान्त नहीं करते, अपितु उनके काव्यात्मभूत रस की पुष्टि एवं आह्लादकता की वृद्धि के ही कारण बनते है । मयूखदूत में लगभग सभीप्रमुख अर्थालंकारों को कुशल निरूपण किया गया है। परन्तु उनमें भी उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, रूपक, उदात्त काव्यलिङ्ग, समासोक्ति, निदर्शना आदि के प्रति कवि का विशेष आग्रह है । काव्य की कथावस्तु, रस एवं संगीतात्मकता में इन अलंकारों ने सर्वथा अनुकूल भूमिका निभाई है तथा कवि की मधुर एवं रसपेशला वाणी में अनुपम श्रीवृद्धि को है।

उपमा अलंकार[7] –

मध्येक्षामप्रथिलधन श्वेतवर्णान्वितानां

नाना भावरैसपरिमलैः पूर्णकुम्भतीनाम् ।।[8]

प्रस्तुत पद्य में उपमेय स्तन, उपमान पूर्ण-पूर्ण सादृश्य वाचक शब्द लुप्त है अतः यहां लुप्तापेमा अलंकार का चमत्कार दिखाई पड़ता है ।

Scanned with CamScanner

श्लिष्टाङ्ग्यो याः कमलवदनाः मांसलाः पीतमध्याः ।
सद्वस्त्रा वा वसनरहिता तर्किताास्ता रसज्ञैः ।।[9]

चित्रित वस्त्रों से श्लिष्टमंगवाली कमल के समान मुखवाली क्षीणमध्याओं को देखकर रसज्ञ लोग यह तर्क करते हैं कि ये सद्वस्त्रा है या वस्त्ररहिता हैं। यहाँ पर भ्रान्तिमान अलंकार की शोभा-दर्शनीय है।

उत्प्रेक्षा अलंकार[10] – मयूखदूत में पद-पद पर अभिनव मनोहारी उत्प्रेक्षाओं का निरूपण हुआ है। कवि की कल्पना है कि पेरिश नाम की विख्यात एवं विचित्र नगरी मानो विश्वकर्मा के सुदीर्घ एवं सुचतुर हाथों के द्वारा स्थापित की गयी है। बहुगुणयुक्ता अलंकृता देशलक्ष्मी ही वहाँ आ विराजी है या कामदेव के राज्य में परिगय की कान्ति से कमनीया कोई कन्या लायी गयी है। प्रस्तुत पद्य में विचित्र नगरी की संभावना विश्वकर्मा के हाथों से की गयी है। अतः क्रियमणता के कारण उत्प्रेक्षा अलंकार की शोभा दर्शनीय है।

सम्प्रश्याग्रे प्राथितनगरी पेरिश्याख्यां विचित्रा
मन्ये न्यस्ता सुचतुरकरैर्विश्वकर्तुः सुदीर्घैः
आयाता वा बहुगुणयुतालंकृता देशलक्ष्मीः,
कन्याऽऽनीता परिणयरूञ्चा कामदेवस्य राज्ये ।।[11]

पेरिस नगरी मानो कामदेव का राज्य है और कोई कान्तियुक्त कमनीय कन्या परिणय के लिए लाई जा रही है। मन्ये ध्रुवे इत्यादि उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द हैं।

रूपक[12] – एवं उत्प्रेक्षा अलंकार –

आयाता वा बहुगुणयुता लंकृता देशलक्ष्मी
कान्याऽऽनीता परिणयरूञ्चा कामदेवस्य राज्ये ।।[13]

इन पंक्तियों में बहुगुणयुक्त देश (उपमेय) में लक्ष्मी (उपमान) का आरोप किया गया है। रूपक का रहस्य अभेदारोप में छिपा हुआ होता है। देशलक्ष्मी ही आ रही है।

तासां केशाः कुटिलितशिखा लम्बिताः शीर्षदेशात्
चन्द्र मन्ये निगिलितुमनाः सैंहिकेयोऽस्ति लम्बः ।
भीत्याऽऽकाशाद् द्रुततरगतिश्चन्द्र आगत्य भूमौ
व्याजी सोऽयं निवसति सुखं कामिनीनां मुखाब्जे ।।

भयभीत चन्द्रमा आकाश में उतर कर पृथ्वी पर आकर छल से कामिनियों के मुख रूपी अब्ज में सुख पूर्वक वास करता है। 9मुखाब्जे" में रूपक एवं चन्द्र मन्ये 9निगिलितुमनाः में उत्प्रेक्षा की एक साथ शोभा शोभायमान है इससे संसृष्टि अलंकार की विछित्ति उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner

(Footnotes)

1 काव्यप्रकाश, 8/67

2 मयूखदूत, 3, पृ. 2

3 वर्णसाम्यमनुप्रास:, काव्यप्रकाश, 9/103

4 अन्यथा तु वृत्त्यानुप्रास: - अलङ्कारसर्वस्वम्, सूत्र - 6

5 मयूखदूत" - श्लोकसं. 1, पृ.सं. 1

6 मयूखदूत" - श्लोकसं. 4, पृ.सं. 3

7 साधर्म्यमुपमा भेदे । - काव्यप्रकाश, 10/87

8 मयूखदूत, श्लोकसंख्या 54, पृ.सं. 28

9 मयूखदूत, श्लोकसंख्या 63, पृ.सं. 32

10 सम्भावनमयोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्, काव्य प्रकाश 10

11 मयूखदूत, श्लोक संख्या 62, पृ.सं. 32

12 तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमययो:। –काव्यप्रकाश, 10/93

13 मयूखदूत, श्लोकसंख्या 62, पृ.सं. 32

Scanned with CamScanner